# शिक्षा क्षेत्र में सुधार

यह एडिटोरियल 12/10/2022 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित "India@75 looking at 100: What India's education system needs" लेख पर आधारित है। इसमें भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधारों के बारे में चर्चा की गई है।

## संदर्भ

वर्ष 2030 तक भारत में विश्व में सर्वाधिक युवा आबादी होगी। युवा आबादी का यह विशाल आकार तभी वरदान सिद्ध होगा जब ये युवा कार्यबल में शामिल होने के लिये पर्याप्त कुशल होंगे। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इसमें प्रमुख भूमिका निभाएगी।

- लेकिन शिक्षा की वर्तमान स्थिति उपयुक्त अवसंरचना की कमी, शिक्षा पर निम्न सरकारी व्यय (जीडीपी के 3.5% से कम) और छात्र-शिक्षक अनुपात की विषमता (एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर छात्र-शिक्षक अनुपात प्राथमिक विद्यालयों के लिये 24:1 है) जैसी प्रमुख चुनौतियों का सामना कर रही है।
- इस प्रकार यह उपयुक्त समय है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाया जाए और ऐसा आधुनिक शिक्षण दृष्टिकोण अपनाया जाए जो उत्तरदायी एवं प्रासंगिक हो। इसके अलावा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy- NEP 2020) के उद्देश्यों को भी साकार किया जाए।

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताएँ

- NEP 2020 का उद्देश्य "भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति" बनाना है। उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता के बाद से भारत में शिक्षा के ढाँचे में सुधार के अधिक प्रयास नहीं हुए हैं और यह इस क्रम में केवल तीसरा बड़ा सुधार ही है।
  - इससे पूर्व की दो शिक्षा नीतियाँ वर्ष 1968 और 1986 में लाई गई थीं।
- इसका उद्देश्य एक खुली स्कूली शिक्षा प्रणाली के माध्यम से 2 करोड़ स्कूली बच्चों को पुनः मुख्यधारा में वापस लाना है।
- मान्यता के एक नए ढाँचे और सार्वजनिक एवं निजी दोनों तरह के स्कूलों को विनियमित करने हेतु एक स्वतंत्र प्राधिकरण के साथ विद्यालयों का प्रशासन अब रूपांतरित हो जाएगा।
- 360-डिग्री समग्र प्रगति कार्ड के साथ मूल्यांकन के तरीके में सुधार किया जाएगा और लर्निंग आउटकम की प्राप्ति के लिये छात्र प्रगति पर नज़र रखी जाएगी।
  - इंटर्नशिप के साथ व्यावसायिक शिक्षा कक्षा 6 से शुरू होगी।

## शैक्षिक सुधारों से संबंधित अन्य प्रमुख सरकारी पहलें:

- प्रौद्योगिकी वर्द्धन शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्यक्रम (National Programme on Technology Enhanced Learning)
- सर्व शिक्षा अभियान (SSA)
- प्रज्ञाता (PRAGYATA)
- मध्याह्न भोजन योजना
- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
- पीएम श्री स्कूल (PM SHRI Schools)

## भारत में शिक्षा क्षेत्र से संबंधित प्रमुख समस्याएँ

- **स्कूलों में अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा:** एकीकृत ज़िला शिक्षा सूचना प्रणाली (UDISE), 2019-20 के अनुसार, केवल 12% स्कूलों में इंटरनेट की सुविधा और केवल 30% में कंप्यूटर उपलब्ध हैं।
  - इनमें से लगभग 42% स्कूलों में फर्नीचर की कमी थी, 23% में बिजली की कमी थी, 22% में शारीरिक रूप से निःशक्त के लिये रैंप की कमी थी और 15% में जल, सफाई एवं स्वच्छता (WAter, Sanitation and Hygiene-WASH) सुविधाओं की कमी थी।

- **उच्च 'ड्रॉपआउट' दर:** प्राथमकि और माध्यमकि स्तरों पर वदि्यालय छोड़ने की दर (dropout rate) बहुत अधकि है। 6-14 आयु वर्ग के अधकिांश छात्र अपनी शकि्षा पूरी करने से पहले स्कूल छोड़ देते हैं। इससे वति्तीय और मानव संसाधनों की बर्बादी की स्थति बिनती है।
    - राष्ट्रीय परविार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 के अनुसार, 2019-20 स्कूल वर्ष से पहले 6 से 17 आयु वर्ग की 21.4% बालकिाओं और 35.7% बालकों स्कूल छोड़ने के पीछे का मुख्य कारण पढ़ाई में रुचि का न होना बताया।
- **'ब्रेन ड्रेन' की समस्या:** IIT और IIM जैसे शीर्ष संस्थानों में प्रवेश पाने के लयि कड़ी प्रतस्पिर्द्धा के कारण भारत में बड़ी संख्या में छात्रों के लयि एक चुनौतीपूर्ण शैक्षणकि वातावरण का नरि्माण कयिा गया है। इससे फरि वे शकि्षा के लयि वदिेश जाना पसंद करते हैं, जसिसे देश अच्छी प्रतभिा से वंचति हो जाता है।
    - भारत में नशि्चति रूप से शकि्षा का मात्रात्मक वसि्तार हुआ है लेकनि गुणात्मक मोर्चे पर (जो कसिी छात्र के नौकरी पाने के लयि आवश्यक है) यह पछिड़ा हुआ है।
- **बड़े पैमाने पर नरिक्षरता:** शकि्षा के संवर्द्धन पर लक्षति संवैधानकि नरि्देशों और प्रयासों के बावजूद लगभग 25% भारतीय अभी भी नरिक्षर हैं, जो उन्हें सामाजकि और डजिटिल रूप से भी वंचति करता है।
- **भारतीय भाषाओं पर पर्याप्त ध्यान का अभाव:** भारतीय भाषाएँ अभी भी अवकिसति अवस्था में हैं, वशिेष रूप से वज्ञिान वषियों में शकि्षा का माध्यम अंग्रेज़ी है, जसिके परणिामस्वरूप ग्रामीण छात्रों के लयि असमान अवसर की स्थति बिनती है।
    - इसके साथ ही, भारतीय भाषाओं में मानक प्रकाशन उपलब्ध नहीं हैं।
- **तकनीकी और व्यावसायकि शकि्षा का अभाव:** हमारी शकि्षा प्रणाली मुख्यतः सामान्यज्ञ प्रकृति की है। तकनीकी और व्यावसायकि शकि्षा का वकिास पर्याप्त असंतोषजनक है, जसिके कारण शकि्षति बेरोज़गारों की संख्या दनि-ब-दनि बढ़ती जा रही है।
- **वहनीयता/सामर्थ्य:** ग्रामीण स्तर पर नम्नि आय के कारण शकि्षा को प्राथमकिता नहीं दी जाती है। जागरूकता एवं वति्तीय स्थरिता की कमी के कारण कई माता-पिता शकि्षा को नविेश के बजाय खर्च के रूप में देखते हैं। वे बच्चों को शकि्षा दलिाने के बजाय चाहते हैं कि उनके बच्चे काम करें और पैसे कमाएँ।
    - उच्च शकि्षा के मामले में, आसपास अच्छे संस्थानों की कमी छात्रों को शहरों का रुख करने के लयि वविश करती है, जसिसे अभभिावकों का खर्च बढ़ जाता है। सामर्थ्य की इस समस्या के कारण नामांकन की नम्नि दर जैसा परणिाम प्राप्त होता है।
- **लगि-असमानता:** समाज में पुरुषों और महलिाओं दोनों के लयि शकि्षा के अवसर की समानता सुनशि्चति करने के सरकार के प्रयासों के बावजूद भारत में महलिाओं की साक्षरता दर, वशिेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, अभी भी बदतर है।
    - संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (UNISEF) के अनुसार, गरीबी और स्थानीय सांस्कृतकि कुप्रथाएँ (कन्या भ्रूण हत्या, दहेज और कम उम्र में ववािह ) पूरे भारत में शकि्षा क्षेत्र में लैंगकि असमानता के नरि्माण में एक बड़ी भूमकिा नभािती हैं।
    - शकि्षा में एक और बाधा देश भर के स्कूलों में व्याप्त स्वच्छता की कमी भी उत्पन्न करती है।

## आगे की राह

- **अनुभवात्मक अधगिम दृष्टकिोण की ओर:** छात्रों को व्यावहारकि लर्नगि अनुभव प्रदान करने के लयि और कार्यबल में प्रवेश के समय उन्हें बाहरी दुनयिा का सामना करने हेतु तैयार करने के लयि समस्या-समाधान और नरि्णय लेने से संबंधति वषियों को स्कूली पाठ्यक्रम में शामलि कयि जाने की आवश्यकता है।
    - अनुभवात्मक अधगिम (Experiential Learning) प्रत्येक छात्र से सक्रयि भागीदारी सुनशि्चति करा सकने की अपनी क्षमता से अधकितम लाभ प्राप्त कर सकता है, जो बदले में उनकी संवेगात्मक बुद्धमित्ता (emotional intelligence) को प्रेरति करता है और उन्हें आत्म-शकि्षण (self-learning) के मार्ग पर आगे बढ़ाता है।
    - कृत्रमि बुद्धमित्ता (AI) को शैक्षकि क्षेत्र से संबद्ध करने से भी अनुभवात्मक अधगिम को बल मलिेगा।
- **राष्ट्रीय शकि्षा नीति का कार्यान्वयन:** NEP के कार्यान्वयन से शकि्षा प्रणाली को उसकी नींद से जगाने में मदद मलि सकती है।
    - वर्तमान 10+2 प्रणाली से हटकर एक 5+3+3+4 प्रणाली की ओर आगे बढ़ने से प्री-स्कूल आयु वर्ग औपचारकि रूप से शकि्षा व्यवस्था में शामलि हो जाएगा।
- **शकि्षा-रोज़गार गलयिारा:** भारत की शैक्षकि व्यवस्था को व्यावसायकि शकि्षा को मुख्यधारा की शकि्षा के साथ एकीकृत करने और स्कूल (वशिेषकर सरकारी स्कूलों में) में सही मार्गदर्शन प्रदान करने के माध्यम से संवर्द्धति करने की आवश्यकता है ताकि यह सुनशि्चति हो सके कि छात्रों को शुरू से ही सही दशिा में नरि्देशति कयिा जा रहा है और वे करयिर के अवसरों से अवगत हैं।
    - ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों में भी व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं और वे अध्ययन के प्रति प्रेरति भी होते हैं, लेकनि उनके पास सही मार्गदर्शन की कमी होती है। यह न केवल बच्चों के लयि बल्कि उनके माता-पिता के लयि भी आवश्यक है जो एक तरह से शकि्षा में लगि अंतर को कम करेगा।
- **भाषाई अवरोध को कम करना:** अंग्रेज़ी को अंतर्राष्ट्रीय समझ के लयि शकि्षा (Education for International Understanding- EIU) के साधन के रूप में रखते हुए, अन्य भारतीय भाषाओं को समान महत्त्व देना महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टकिोण से वभिन्नि भाषाओं में संसाधनों का अनुवाद करने के लयि वशिेष प्रकाशन एजेंसयिों की स्थापना की जा सकती है ताकि सभी भारतीय छात्रों के पास उनकी भाषाई पृष्ठभूमि से अप्रभावति एकसमान अवसर उपलब्ध हो।
- **अतीत से भवषि्य की ओर:** भवषि्य की ओर देखना महत्त्वपूर्ण है, लेकनि साथ ही हमें अपनी गहरी जड़ों को भी मन में बनाए रखना चाहयि।
    - प्राचीन भारत की 'गुरुकुल' प्रणाली से बहुत कुछ सीखा जा सकता है जो सदयिों पहले अकादमकि शकि्षा के बजाय समग्र वकिास (जो आज आधुनकि शकि्षा का एक वचिारार्थ वषिय बना है) पर केंद्रति थी।
    - प्राचीन भारतीय शकि्षा प्रणाली में नैतकिता एवं मूल्यपरक शकि्षा अधगिम या लर्नगि के मूल में रही थी। आत्मनरि्भरता, समानुभूति, रचनात्मकता और अखंडता जैसे मूल्य प्राचीन भारत में महत्त्वपूर्ण रहे थे जो आज भी प्रासंगकि हैं।
    - प्राचीन काल में शकि्षा मूल्यांकन वषियगत ज्ञान के वर्गीकरण तक ही सीमति नहीं था। छात्रों का उनके द्वारा सीखे गए कौशल और वास्तवकि जीवन स्थतियिों में व्यावहारकि ज्ञान को आजमा सकने की क्षमता के आधार पर मूल्यांकन कयिा जाता था।
        - आधुनकि शकि्षा प्रणाली को भी मूल्यांकन की ऐसी ही एक प्रणाली तैयार करनी चाहयि।

**अभ्यास प्रश्न:** "भारत में शिक्षा का मात्रात्मक विस्तार तो हुआ है लेकिन गुणात्मक मोर्चे पर यह अभी भी पीछे है।" विचार करें कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 शिक्षा प्रणाली को उसकी नींद से जगाने में किस प्रकार मदद कर सकती है।

## यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQ)

**[illegible]**

**भारत के संविधान के निम्नलिखित में से किस प्रावधान का शिक्षा पर प्रभाव है? (वर्ष 2012)**

1. राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत
2. ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकाय
3. पांचवी अनुसूची
4. छठी अनुसूची
5. सातवीं अनुसूची

**नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:**

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

**उत्तर- (D)**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/reforms-in-education-sector-1